आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय एच.ओ. पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 22/07/2016 ● अंक - 593 ● तारीख - 23 जुलाई 2016, श्रावण कृष्ण - 04 ● शनिवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ - 02 ● मूल्य - 1 रूपया ● पृष्ठ - 01

सत्यसांई बाबा (अनमोल वचन)

अधिकाधिक लोगों को प्रेम करो, अधिकाधिक मात्रा में उनसे प्रेम करो।

जीवन के सात सच्चे मंत्र

1. दर्पण, झूठ बोलने नहीं देगा।
2. ज्ञान, भयभीत होने नहीं देगा।
3. आध्यात्म, मोह करने नहीं देगा।
4. सत्य, कमजोर होने नहीं देगा।
5. प्रेम, ईर्ष्या करने नहीं देगा।
6. विश्वास, दुःखी होने नहीं देगा।
7. कर्म, असफल होने नहीं देगा।

क्या आपश्री जानते है?

- महात्मा गाँधी ने अपने जीवन में सिर्फ एक फिल्म देखी थी और वह फिल्म थी सन् 1943 में बनी 'राम राज्य।'
- सर्वाधिक आयु वाला जानवर कछुआ है।
- पहला ज्ञानपीठ पुरस्कार 1965 में मलयालम कवि गोविंद शंकर कुरूप को दिया गया था।
- बिच्छू की लगभग 2000 जातियाँ होती हैं जो न्यूजीलैंड व अंटार्कटिका को छोड़कर विश्व के सभी भागों में पाई जाती है।
- कराटे शब्द का अर्थ होता है खाली हाथ।
- बाघ के पूरे शरीर की लम्बाई लगभग 9 फीट तक हो सकती है जबकि उसकी पूँछ की लम्बाई 3–4 फीट तक हो सकती है।

बात पते की...

सिर्फ
आसमान छू लेना ही
कामयाबी नहीं है.....
असली कामयाबी तो वो है
कि.....
आसमान भी छू लो.....
और पांव भी
जमीन पर हों।

मत करना नजर अंदाज

''मत करना नज़ र अंदाज़
'माँ-बाप'
की तकलीफों को.....
जब ये बिछड़ जाते हैं
तो रेशम के तकिये पर
भी नींद नहीं आती''

सुविचार

अपनी रोटी मिल बांट कर खाओ, ताकि सभी भाई सुखी रह सकें।।

श्रावन माह में देवघर में लगेगा शिव भक्तों का मेला

देवघर का बाबाधाम मंदिर सावन महीने में भक्तों और कांवड़ियों के स्वागत के लिए तैयार है। एक माह तक चलने वाले श्रावणी मेले में देश और विदेश के लाखों भक्त प्रतिदिन देवाधिदेव भगवान शंकर के पवित्र ज्योर्तिलिंग पर जलाभिषेक करेंगे।

श्रावन महीने में शिव को गंगाजल अर्पित करने का विशेष महत्व है। इस दौरान श्रद्धालु देवनगरी देवघर से करीबन 108 किलोमीटर दूर बिहार के अजगैबीनगरी सुल्तानगंज से कांवड़ भर पैदल यात्रा के बाद बाबा वैद्यनाथ को जल चढ़ाते हैं।

पौराणिक ग्रंथों के अनुसार राजा सगर के 60 हजार पुत्रों के उद्धार के लिए जब उनके वंशज भागीरथ यहाँ से गंगा को लेकर आगे बढ़ रहे थे, तब इसी अजगैबीनगरी में गंगा की तेज धारा से तपस्या में लीन ऋषि जान्ही की तपस्या भंग हो गई। इससे क्रोधित हो ऋषि पूरी गंगा को ही पी गए। बाद में भागीरथ के अनुनय–विनय पर ऋषि ने जंघा को चीर कर गंगा को बाहर निकाला। यहाँ माँ गंगा को जान्ह्वी के नाम से जाना जाता है।

यह भी माना जाता है कि मां गंगा के इसी तट से भगवान राम ने पहली बार भोलेनाथ को कांवड़ भर कर गंगा जल अर्पित किया था और सदियों से चली आ रही यह परंपरा आज भी जारी है। सुल्तानगंज से जल उठाने के बाद कंवड़िये बोल–बम का उदघोष करते हुए बाबा के मंदिर की ओर बढ़ते हैं। यह रास्ता काफी कठिन होता है।

इस दौरान भक्तों को काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। लेकिन इसके बावजूद भक्तों का जोश और उमंग देखते ही बनता है। इस दौरान कुछ ऐसे भक्त भी होते हैं जो इस 108 किलोमीटर की कठिन यात्रा को 24 घंटे में पूरा कर जलार्पण करने का संकल्प लेते है जिन्हें डाकबम कहते है।

बाबाधाम देवघर को हृदयपीठ और चिता भूमि भी कहा गया है। इसी पावन धरा पर माता सती का हृदय गिरा था। इस वजह से यह ज्योतिर्लिंग के साथ–साथ शक्ति पीठ भी है।

मोक्ष प्राप्त करने का सरल उपाय - चार पुरूषार्थ

कर्तव्य पालन की इच्छा में व्यवधान आने से क्रोध उत्पन्न हो जाता है और कर्तव्य पालन की इच्छा पूर्ण होने से लोभ उत्पन्न हो जाता है। जो मनुष्य दोनों स्थितियों में सम–भाव में रहता हुआ निरन्तर अपने कर्तव्य पालन में लगा रहता है, वह क्रोध, लोभ और कामना रूपी सीढ़ियों को पार करके शीघ्र ही लक्ष्य यानि ''मोक्ष'' को सहज रूप से प्राप्त हो जाता है। जिस प्रकार पहली कक्षा को पास किये बिना कोई भी छात्र दूसरी कक्षा को पास नहीं कर सकता है और दूसरी कक्षा को पास किये बिना तीसरी कक्षा को पास करना असंभव है, उसी प्रकार क्रोध रूपी पहली सीढ़ी को पार किये बिना कोई भी मनुष्य लोभ रूपी दूसरी सीढ़ी को पार नहीं कर सकता है और लोभ के त्याग के बिना तीसरी सीढ़ी यानि कामनाओं से मुक्त होना असंभव है।

इच्छाओं की पूर्ति होने पर ही कामनाओं का अन्त संभव होता है, लेकिन एक इच्छा पूर्ण होने के पश्चात नवीन कामना के उत्पन्न होने के कारण कामनाओं का अंत नहीं हो पाता है।

इच्छाओं के त्याग करने से कामनाओं का मिटना असंभव है, केवल यही ध्यान रखना होता है कि इच्छा की पूर्ति के समय कहीं कोई नवीन कामना की उत्पत्ति तो नहीं हो रही है।

कामना पूर्ति के लिये ही मनुष्य को बार–बार शरीर धारण करके इस भवसागर में सुख–दुख रूपी भंवर में फंसकर गोते खाने ही पड़ते हैं, बार–बार शरीर धारण करने की प्रक्रिया से मुक्त होने पर ही मनुष्य जीवन का लक्ष्य ''मोक्ष'' की प्राप्ति होती है।

''मोक्ष'' ही वह लक्ष्य है जिसे प्राप्त करने के पश्चात कुछ भी प्राप्त करना शेष नहीं रहता है। इस लक्ष्य की प्राप्ति मनुष्य शरीर में रहते हुए ही होती है। जिस मनुष्य को शरीर में रहते हुये मोक्ष का अनुभव हो जाता है, उसी का मनुष्य जीवन पूर्ण होता है। इस लक्ष्य की प्रप्ति के बिना सभी मनुष्यों का जीवन अपूर्ण ही है।

अमरूद

हर मौसम में सबसे आसानी से उपलब्ध होने वाला फल है अमरूद। यही वजह है कि इसकी उपेक्षा भी सबसे अधिक होती है और इसके फायदों की अनदेखी की जाती है। 'इसमें कैलोरी काफी कम मात्रा में होती है। एक 50 ग्राम के अमरूद में 40 कैलोरी होती है। फाइबर की अधिकता आँतों की सफाई के लिए जरूरी होती है। अमरूद में एस्ट्रिंजेंट का होना पेट व आँतों में संक्रमण करने वाले बैक्टीरिया की उत्पत्ति को रोकता है। यह एसिडिटी की समस्या को कम करता है।'

अमरूद मधुमेह पीड़ितों के लिए भी फायदेमंद है। यह फल रक्त शर्करा को धीरे धीरे ग्रहया करता है।

अमरूद में विटामिन सी प्रचुरता में होता है। एक औसत अमरूद में संतरे से चार गुणा अधिक विटमिन सी होता है। विटामिन सी इम्युनिटी यानी रोगों से लड़ने की क्षमता को मजबूत बनाता है। कोलेजन का संतुलन बना रहता है, जिससे त्वचा ढीली नहीं पड़ती। अमरूद के छिलके व उसकी निचली परत में सबसे अधिक गूदा होता है, इसलिए इसे खाना न भूलें। अमरूद में प्राकृतिक एंटीऑक्सीडेंट इलाजिक एसिड होता है, जो कैंसररोधी गुणों से भरपूर है। इसमें बी कॉम्पलेक्स विटामिन और मैग्नीशियम और ताँबा आदि मिनरल होते हैं। इसमें पोटैशियम भी प्रचुरता में होता है। इसे कच्चा व पकाकर दोनों तरह से खाया जा सकता है।

दूर करें नेगेटिविटी

आज की इस भागदौड़ भरी जिंदगी में जहाँ किसी को अपने बारे में भी सोचने की फुर्सत नहीं, ऐसे में बार–बार यह सोचना कि लोग हमारे बारे में क्या सोचते होंगे, नकारात्मकता की ओर ले जाता है। कई बार सोच का यह नजरिया हमारे सकारात्मक विचारों को भी नकारात्मकता की तरफ मोड़ देता है, लेकिन व्यवहार में बदलाव और सकारात्मक सोच अपनाकर इससे बचा जा सकता है।

दुष्प्रभाव हैं कई–लगातार नकारात्मक सोचते रहने से चिंता, परेशानी, चिड़चिड़ापन, रिश्तों में कड़वाहट और जीवन से निराशा जैसी समस्याएँ होने लगती हैं। इसी तरह तनाव में रहने की वजह से कई शारीरिक बीमारियाँ जैसे ब्लड प्रेशर, डायबिटीज, हृदय संबंधी रोग, थकान और नींद न आने की समस्या आदि होने लगती हैं।

इस तरह बदलाव लाएं

1. किसी भी व्यक्ति या चीज के बारे में अंतिम निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले विचार जरूर करें जैसे यह इतना बुरा नहीं है, जितना मैं सोच रहा हूँ।
2. कुछ नहीं से कुछ ज्यादा बेहतर है।
3. हमेशा खुद को दोष देने से अच्छा है कि सोचने का नजरिया बदल लिया जाए, जिससे सारे काम आसान हो जायेंगे।
4. लंबी गहरी साँस लें और रिलेक्स होने की कोशिश करें।
5. कैसी भी परिस्थिति हो, उसके साथ तालमेल बिठाने का प्रयास करें।

6. खुद को व्यस्त रखने की कोशिश करें। पसंदीदा कामों में मन लगाएँ।
7. लोगों से मिलें, उनकी जगह खुद को रखकर व्यवहार को संतुलित रखें।
8. जब भी कुछ बढिया करें तो खुद की पीठ थपथपाएं।

मानव मन के बोल

गतांक से आगे...

उनको मेरा नमस्कार हैं, नारू जी या मारू जी, ऐसा कुछ नाम था उनके घर भी गये उनके बेटो से भी मिले। खूब आनन्द आया। एक नया जीवन जिया हमने आदिवासियों वनवासियों के बीच में। नया जीवन जिया। एक ऐसे झोपड़े में गये जो पहाड़ी पर केवल एक ही झोपड़ा बना हुआ था। लोग कहते हैं, नल नहीं हमारे गाँव में, बिजली नहीं आई। उस पहाड़ी पर तो चढ़ना ही मुश्किल था, उबड़–खाबड़ था। सड़के की तो बात छोड़ो पगडंडी भी नहीं थी। काँटे थे, नुकीले पत्थर थे, और छोटा सा एक झोपड़ा पहाड़ी पर बाहर एक माँ मा थाराऊ मलवा ने आया। थोड़ों गेहूँ लाया, थोड़ों आटो लाया, थोड़ी दाल लाया हैं। थोड़ा आपरे टाबर रे लिए सत्तु लाया। कसार, पंजरी हां।

सत्यनारायण भगवान की कथा करने पे भी प्रसाद वितरण करो, रोज क्या होनी चाहिए, 24 घण्टे कथा हो रहीं हैं। 24 घण्टे श्वास हर श्वास आपके जीवन की एक कथा आपको सुना रही हैं। अगली श्वास आवे या नहीं आवे मालुम नहीं पड़ती। परदेशी कब रवाना हो जाता मालुम नहीं पड़ती–महाराज! तो हर बार प्रसाद दिया करो। हर बार प्रसाद दिया करो।

घर दरवाजा खुला पड़ या,
सब सोवो खूंटी तांणी रे।

उसके तो दरवाजे ही नहीं थे–महाराज और जो चौखट थी न चौखट वो नीचे से साढ़े तीन फीट ही थी। खूब सिर नीचे झुका के गये। तो एक कोने में बकरी को देखा, बकरी बंधी हुई थी। बहुत अच्छा हैं। फिर उनकी कोठी को देखा तो कोठी खाली थी। मैंने कहा ये कोठी तो हैं पर अनाज, बाऊजी अणा छोरा रो बाप मजूरी करवा ने गियों हैं।

हाँ झोपड़ी में जब देखा कोठी खाली पड़ी मिट्टी की। अरे भाई अनाज नहीं। पूरी झोपड़ी में अनाज नहीं। अरे महाराज स्टोर नं. 3 में हूँ, आपके पास तो 11 स्टोर हैं। आपके पास तो कोल्ड स्टोरेज भी अलग हैं। आपका खुद का बैंक चलता हैं। आपके खुद के अरबों रूपये के शेयर हैं। भारत के सभी बड़े अमीरों बहुत अच्छा। 5–10 हॉस्पिटल बना दो न गरीबों के लिए। अमीर सा. हमसे नाराज मत होना। बनाना चाहिए आपको। गरीबों के लिए बनाना चाहिए। टोटल फ्री बनाना चाहिए। जब नारायण सेवा आप से दान माँग करके जब 1100 बेड के लगभग हॉस्पिटल इतने सालों से 1995–96 से संचालन कर सकती हैं, तो आप क्यो नहीं कर सकते हो? आपके पास तो अरबों रूपया हैं, आपको तो केवल एक इशारे की जरूरत हैं।

जब आप कारखाने बनाते हो तो कारखाने के लिए संकेत करते हो और छः महीने में बनके तैयार हो जाता हैं। छः महिने में हॉस्पिटल खड़ा हो जायेगा। फ्री रखियेगा फ्री रखियेगा। पहले आवे पहले पावें। अमीर नहीं आना चाहिए। अमीर से पैसा लीजिए ना। उस हॉस्पिटल में नहीं उसके पास दूसरा हॉस्पिटल बना दीजिए। वहाँ अमीरों के लिए रखिए। अमीर हॉस्पीटल नाम रख दीजिए। करोड़ों रूपया लेओ आप बहुत हैं–उनके पास। क्या कैलाश जी आप क्या–क्या लिखवाने लग जाते हो लोग नाराज हो जाऐंगे। भाई मैं नाराज नहीं करता ये करने योग्य हैं। ये ही जुगल किशोर बिड़ला जी ने किया न। उन्होंने बहुत दान दिया। बहुत गौशालाएं खुलवाई। उन्होंने जगह–जगह धर्म शालाएं बनवाई। जोशी मठ में धर्मशाला, काली कमली वाले की धर्मशाला, गरीबों के लिए करो कुछ फ्री करो। अमीरों के लिए तो बहुत बड़ी–बड़ी होटल महराज! हाँ मैं तो खुद जब नारायण सेवा प्रारम्भ हुई उसके 15 सालों तक एक–एक धर्मशाला में दिल्ली में जाता था तो मैं अपने आप को पाता हूँ। मैं आज भी याद करता हूँ कि मैं लक्ष्मी–नारायण धर्मशाला के दरवाजे में बहुत दीन–दुःखी की तरह लाईन में खड़े होकर के मन ही मन सोचता था कि, ये मैनेजर सा. एक कमरा दे दे एक अलमारी दे दे और कई बार मना किया।

क्रमशः आगले अंक में...

सम्पादकीय

महात्मा बुद्ध के एक शिष्य ने राह चलते एक भिखारी को अपने पास बुलाकर उसे जीवन की निस्सारता का उपदेश दिया। परन्तु भिखारी कभी इधर देखता तो कभी उधर। जब शिष्य का उपदेश समाप्त हुआ तो वह भी अपनी राह चल पड़ा। शिष्य को बुरा लगा कि मधुर और प्रेरक उपदेश के बदले इस मूर्ख ने उसका आभार तक नहीं माना। शिष्य ने महात्मा बुद्ध से भी इस प्रसंग की चर्चा की और भिखारी को मूर्ख कह दिया।

बुद्ध ने शिष्य से उस भिखारी को तुरन्त बुलाने को कहा। कुछ ही देर में शिष्य दीन–हीन भिखारी को ले आया। बुद्ध ने सबसे पहले उसके सिर पर हाथ फेरा और वह हैरान था कि गुरुदेव ने बिना उसे कुछ कहे ही क्यों भेज दिया। बुद्ध हैरान शिष्य की ओर देख मुस्कराए और बोले उसके लिए उपदेश से ज्यादा जरूरी भोजन था। शिष्य यह सुन निरुत्तर हो गया। वह भिखारी की नहीं अपनी मूर्खता पर शर्मिन्दा था। तात्पर्य यह कि समाज के सुखी होने में ही व्यक्ति का सुख निहित है। जब तक समाज में एक भी अशक्त, दीन–हीन और पीड़ित है, तब तक किसी को अपने इर्द–गिर्द सुख का अम्बार जुटा लेने का भ्रम भी नहीं पालना चाहिए। सुख–शांति इसी में है कि प्रभु प्रदत्त इस जीवन और जगत में अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करते हुए दीन–दुःखी, पीड़ित और निराश्रितों के लिए भी कुछ करें। अपेक्षाओं से निकटता कटुता का कारण बनती है। जब हम अपने से कमजोर के लिए सेवा का भाव लेकर आगे बढ़ेंगे तो प्रभु कृपा से सुख–समृद्धि स्वतः ही हमारे द्वार पर दस्तक देने लगेगी।

जैसे लकड़ी में व्याप्त अग्नि नहीं दिखाई पड़ती, वैसे ही परमात्मा दिखाई नहीं देता। जबकि परमात्मा ही इस समस्त जगत को लीला से प्रकट कर स्वयं दृष्टि रूप से देखता है। इसीलिए श्रुति का भी यही कहना है कि 'न दृष्टे दृष्टार पश्ये' अर्थात्–दृष्टि या दृश्य को नहीं, बल्कि दृष्टा को भी देखो, उसको जानो–समझो। वही आत्मा है, जो भीतर भी है और बाहर भी है। इस सूत्र के माध्यम से हमें अपनी श्रद्धा व साधना को सशक्त बना अपने आत्मबल का निर्माण करके उसे अन्तस मूलमंत्र है। अतएव भीतर के मंथन से जो कुछ प्राप्त हो, उससे प्रेरित होते हुए बाहरी जगत में जीएं। परम सन्तोष मिलेगा और जीवन का कल्याण सुगम हो जायेगा।

घर से निकलते ही वाई-फाई ऑफ कर दें

स्मार्टफोन के वाई–फाई को घर से बाहर निकलते ही ऑफ कर देन चाहिए। अगर आपके स्मार्टफोन का वाई–फाई हमेशा ऑन रहता है, तो उसकी बैटरी पर बेवजह जोर पड़ता है। अब पब्लिक वाई–फाई इतनी जगहों पर नहीं है जो आप हर जगह कनेक्टिविटी ढूँढते रहेंगे। लेकिन जैसे ही आप अपने ऑफिस पहुँचते हैं, तो वाई–फाई से फिर कनेक्ट कर सकते हैं, लेकिन कोई जरूरी नहीं है कि आप हर समय यह बात याद रखें कि वाई–फाई फिर से ऑन करना है। ऐसी ही परेशानी के लिए बना है एक ऐप वाई–फाई सेवर। एक काम यह बखूबी करता है और वह है कि अगर आपका स्मार्टफोन किसी वाई–फाई नेटवर्क से जुड़ा नहीं होता तो यह वाई–फाई को ऑफ कर देता है। यह ऐप नेटवर्क पर निर्भर करता है अगर नेटवर्क एक स्तर से कमजोर हो जाता है तो यह स्मार्टफोन से कनेक्टिविटी बंद कर देता है क्योंकि उससे कनेक्ट करने में बैटरी पर बहुत जोर पड़ता है। जब आप ऐप को डाउनलोड करने के लिए सेटिंग तय करक रहे हों तो आपके पास कनेक्ट करने के कई विकल्प होंगे, अगर आपका स्मार्टफोन लॉक किया गया हो मतलब इस्तेमाल में न हो तो कनेक्टिविटी बंद भी करने का विकल्प है।

रक्त की सफेद कणिकाएँ

रक्त में लाल रक्त कणिकाओं की तुलना में, सफेद कणिकाओं की संख्या बहुत ही कम होती है। सामान्यतः 500–600 लाल रक्त कणिकाओं में एक सफेद रक्त कणिका पायी जाती है। इनका आकार भी अपेक्षाकृत बड़ा होता है। रंग तो सफेद होता ही है, जिस कारण हम इसे सफेद रक्तकण कहते हैं। इनकी आकृति (रचना) किसी निश्चित आकार की नहीं होती है। ये आवश्यकता एवं परिस्थिति के अनुसार अपनी आकृति बदलती रहती है। यह इनकी विशेषता होती है। एक और विशेष गुण यह है कि ये स्वयं गतिशील हो सकती है। ये अवलेह (जैली) जैसा लुआबदार (लेसदार) पदार्थ की बनी होती है, जिससे संकरे से संकरे, तंग मार्ग से भी गमन करने में कठिनाई नहीं होती और सुगमता से निकलती जाती है। इसकी उत्पत्ति अस्थि मज्जा एवं लसीका ग्रंथियों (लीम्फाटीक ग्लैंड्स) दोनों स्थानों पर होती है। जहाँ लाल रक्त कणिकाओं में एक भी नाभिक नहीं होता, वहीं सफेद रक्त कोशिका में एक से अधिक नाभिक भी होते हैं।

120 दिव्यांगों को लगाए कृत्रिम अंग -नारायण सेवा संस्थान में गुरूपूर्णिमा महोत्सव

नारायण सेवा संस्थान के बड़ी ग्राम स्थित सेवा महातीर्थ में गुरू पूर्णिमा महोत्सव पर संस्थान संस्थापक आचार्य महामंडलेश्वर श्री कैलाश जी मानव व सह संस्थापिका कमला देवी अग्रवाल का संस्थान साधको व देश भर से आए संस्थान सहयोगियो ने वंदन–अभिनंदन किया। कार्यक्रम में दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाए गए। समारोह के प्रारम्भ में अग्रसेन चौराहा से संस्थान के सूर्यागेट तक शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा के समारोह स्थल पर पहुँचने पर श्री मानव जी की आरती की गई। इसके पश्चात संस्थान अध्यक्ष श्री प्रशांत अग्रवाल, निदेशक वंदना अग्रवाल, जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा, सोहन लाल पूर्बिया आदि ने पाद् प्रक्षालन कर गुरू वंदन किया। प्रोजेक्टर पर संस्थान के निःशुल्क सेवा प्रकल्पों को दिखाया गया। सेवा परमो धर्म ट्रस्ट बाल गृह के प्रज्ञाचक्षु व विमंदित बालको ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम के विशिष्ठ अतिथि विनोद बिहारी सक्सेना जयपुर, दीन दयाल शर्मा आगरा, श्री प्रकाश बड़ौदा, सुन्दर शाह इन्दौर, के. एल गुप्ता जयपुर थे।

इस अवसर पर श्री मानव जी ने गुरू पूर्णिमा ओर जीवन में गुरू के लिए महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मनुष्य को अपनी वृतियाँ समझने के लिए गुरू के मार्गदर्शन की ही आवश्यकता होती है। जिस प्रकार दूसरों का दूख देखकर हमारा मन द्रवित हो जाता है, उसी प्रकार अज्ञानता से आवेष्टित हमारी दीन दशा को देखकर सद्गुरू का मन द्रवित हो जाता है और वे मन को स्थिर व शांत करने के लिए आशीर्वाद की वर्षा करते है। गुरू का सानिध्य और सत्संग अहँकार को विगलित करते हैं। सहसंस्थापिका कमला देवी अग्रवाल ने कहा कि अज्ञानता अंधकार है और विवेक प्रकाश। समारोह के प्रारंभ में संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान की सेवा गतिविधियों पर प्रकाश ड़ाला।

इस अवसर पर श्रीमती वंदना अग्रवाल, जगदीश आर्य व देवेन्द्र चौबीसा ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में सड़क दुर्घटनाओं, मधुमेह, गेगरीन, टयूमर, व जन्मजात व्याधियों के कारण अपाहिज हुए 100 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग (हाथ–पैर) लगाए गए। संस्थान में अब तक 40 हजार दिव्यांगों के कृत्रिम अंग लगाए जा चुके हैं। आस्था चैनल से देशभर में प्रसारित कार्यक्रम का संचालन महिम जैन ने किया।

आँगनवाडी केंद्र को नारायण सेवा से मिले संसाधन

राजस्थान सरकार की 'नंद घर योजना' के अंतर्गत नारायण सेवा संस्थान द्वारा पिछले दिनों गोद लिए गए दस आंगनवाडी केंद्रो में से बड़गांव पंचायत समिति के नाथावतों का गुड़ा केन्द्र से इन केंद्रो को संसाधन मुहैया कराने का कार्यक्रम शुरू हुआ।

संस्थान निदेशक वंदना अग्रवान एवं संस्थान साधकों की टीम ने केंद्र के बच्चों को नए कपड़े, बिस्किट पैकेट, स्टेशनरी ,खिलोने व नेपकिन और केंद्र के लिए घड़ी, अलमारी, पेयजल टंकी, टेबल, कुर्सी, वेट मशीन, बच्चों का पोषाहार बनाए जाने वाले व बच्चों के लिए थाली, कटोरी व चम्मच सेट प्रदान किए। इस अवसर पर सरपंच गंगा बाई, उपसरपंच भूरसिंह देवडा, आँगनवाडी कार्यकर्ता मीना कुँवर, सी.डी पीओ हर्षा शर्मा, सुपर वाईजर एन. एस यादव, प्रचेता मनोरमा पारिक व सचिव हिम्मत सिंह व संस्थान साधक जया भल्ला तथा दिलीप चौहान भी उपस्थित थे।

मानस योग साधना

बड़े भाग मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सद ग्रंथन्हि गावा।।

मानव शरीर अनमोल है। लाखों योनियों में भटकते हुए जीव पर जब ईश्वर अहेतू की दया करता है तब कहीं जाकर यह मानव शरीर मिलता है। किंतु हम इस हीरे को कौड़ी बराबर भी नहीं समझते और रात–दिन इसका दुरुपयोग करते रहते हैं। भगवान ने अति विकसित बुद्धि दी ताकि हम इसका सदुपयोग करके संसार की यथार्थ खोज कर इसके बंधन से मुक्त हो सकें किंतु हमने इस बुद्धि को संसार में न लगाकर उस भगवान में लगा दिया जो बुद्धि से परे हैं। परिणाम, हम संसारन में फंसते गये और प्रभु से दूर होते गए। भगवान ने हमें अति सुंदर प्रेम और भावों से भरा हृदय दिया ताकि उस हृदय को प्रभु को समर्पित कर दिव्य प्रेम में सराबोर हो सकें किंतु हमने उस दिल को दुनिया के मिथ्या नाते रिश्तों में लगा दिया। परिणाम, हम प्रेम के सागर में रहते हुए भी प्रेम से वंचित रह गये। भगवान ने हमें अति सबल दो हाथ दिए ताकि हम निष्काम भाव से कर्म हरते हुए संसार सागर से तर सकें। अपने कर्म समर्पित कर उसका दिव्य प्रेम पा सकें किंतु हमने इनका दुरूपयोग किया दिशाहीन क्रियाएँ करने में। कर्म न करके कर्मकाण्ड को अपना आश्रय बनाया । परिणाम, अभी तक तो कुछ हासिल हुआ नहीं है, भविष्य में होगा, इसकी संभावना भी कम ही है। जीवन भर हमें कोई लाख समझाए, हम समझने को तैयार नहीं हैं किंतु हमें समझ आता है तब जब जीवन के अंतिम क्षणों में मृत्यु हमारे सामने आकर खड़ी होती है और हम खाली हाथों को मसलते रह जाते हैं। तब हम कुछ क्षणों की मोहलत पाना चाहते हैं मानो अपनी सारी गलतियों को क्षण भर में सुधार डालेंगे। किंतु मित्रों, तब तक बहुत देर हो जाती है और देवदुर्लभ यह शरीर एक बार फिर मिट्टी में मिल जाता है।

अभी भी समय है जागने का। कौन जाने, कुछ समय शेष हो, उसका सदुपयोग कर लो। अपने अंदर बैठे सच्चिदानंद प्रभु को जगा लो, सारी बिगड़ी बन जायेगी। ईश्वर आपको शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करे।

साभारः- माँ मालती

मुस्कान मानवता की

¼ekuo /keZ Ük[kyk dk "k"Ve ¼6½ i¦"i½

ईमानदारी रूपी हीरा

हमारे नेपाल, श्रीलंका, भूटान, मालदीव में, मोदी साहब छोटे–छोटे राष्ट्रों में गये। केवल 30 लाख की जनसंख्या है मंगोलिया की, हमारे अहमदाबाद से भी छोटा, राजस्थान की जनसंख्या 7 करोड़ 21 लाख (लगभग) मंगोलिया आ जावे पूरे राजस्थान में इतना बड़ा राजस्थान है।

हर बाला देवी की मूरत–बच्चा बच्चा राम है।

पाली–मारवाड में, तो मैंने उनको अन्दर बुलाया, उनको जलपान कराया, उनको बहुत धन्यवाद दिया। भाई आप इतने ईमानदार हैं वास्तव में आप 150/– रूपया लाकर नहीं देते, देखो आप घर से वापस आये हो। ये ऐसा मेरा राष्ट्र होना चाहिये, मेरा भारत विश्व गुरू, तो मैंने उनका आदर प्रकट किया। तो मैंने उन बाबू जी को कहा, तो बोले–धन्यवाद देने की फुर्सत ही नहीं थी मेरे को। उनको धन्यवाद देने की फुर्सत नहीं। कहाँ खो गये, कहाँ भटक गये?

एक बार की बात है, ये बातें मैं अपने जीवन के अनुभव की बता रहा हूँ। महानुभाव कई मुझे ऐसे मिले, जिन्होंने मुझे अच्छे – अच्छे पाठ पढाये।

मुझे कहा–कैलाश जी, आज आप 4.15 बजे आए हो, सुबह 4.00 बजे आना चाहिये। आप डेली के बाबू हो , आगे समय के महत्व को समझना, समय रूपी हीरा।

अरे महाराज कुछ दोहा लिखवा दो, कुछ चौपाइयाँ लिखवा दो। मैं तो नहीं बना पाया, हमारे बंशी जी बावरा साहब बहुत बनाते हैं। रहिमदास जी का दोहा –

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना जुड़े , जुड़े गाँठ पड़ जाय।
रहीमा जुड़े गांठ पड़ जाय।।(88)

प्रेम को कम मत कीजिये, जब आप किसी से कुछ भी व्यवहार करें, तो सोचिये 30 साल से उनका मेरे पर उपकार है। जब मेरे पास 5/– रूपये नहीं थे।

जब मेरा सिर दर्द हो रहा था बहुत जोर से, एनासिन की गोली खरीद ली थी। उस समय ये गोली बहुत चलती थी, अभी तो बुखार के लिये पेरासिटामोल, चलती है, पर कम से कम प्रयोग करना चाहिये। मालुम होना चाहिये सिर दर्द का कारण क्या है? उस समय दाल–रोटी की चिन्ता थी, 50/– रूपये का बाबूजी को मनी ऑर्डर कराना है। हमारे भीलवाडा में एक साहब थे उनका कुछ कर्जा रह गया था मेरे पर, तो उनको 50/– रूपया महीना भेजता था। 4–5 महीने भेजता रहा। एक महीने भेज नहीं पाया तो डाक की चिट्ठी आ गई कि मनी ऑर्डर नहीं मिला आपका, जल्दी भेजिये। मैंने उनको एक अन्तर्देशीय पत्र लिखा, बाबुजी, मेरे को तनख्वाह बहुत कम मिलती है, इस बार माफ कर दें, अगली बार भेज दूँगा। आपके पास तो भगवान ने बहुत पैसा दिया है, आपके खुद का बंगला भी है।

हर महीने शायद 55/– महीना किराया देता था, तो मैंने कहा–आपकी तो भगवान की दया से बहुत सम्पत्ति है। चौथे दिन उनकी डाक की चिट्ठी आई, बोले आपकी औकात किया है मेरे सामने, कहाँ आप, आप तो बहुत छोटे आदमी हो। मेरे को भगवान ने बहुत सम्पन्न बनाया है, आपने मेरे से तुलना कैसे की? अपनी औकात में रहिये। जी आप की बात सही है, मैं औकात भूल गया था। मैं भूल गया था कि अमीरी बहुत बड़ी बात होती है, मैं भूल गया था कि सोने की चमक भ्रमित कर देती है, मैं भूल गया था कि–

कनक-कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
ये खाय बौरात, वो पाये बौरात।। (89)

बौरात अर्थात् पागलपन। किसी गरीब को देखकर हँसिये मत, उसकी मदद कीजिये, हो सके उतनी कीजिये। एक पैसा, दो पैसा दे दीजिये, एक कपड़ा दे दीजिये, कुछ तो दीजिये।

स्वामी रामदास स्वामी जी – भिक्षाम देहि के लिये जाया करते थे। एक डोकरी माँ कहा करती थी, कुछ नहीं बाबू, आगे चलो, आगे चलो। चौथे दिन कहा–माँ आप ये मिट्टी डाल दे। मेरे कमण्डल में। बोली–मिट्टी का क्या करेगा, मिट्टी खायेगा क्या। बाबा – तुम्हारी ना देने की आदत है। क्या रोज, ना है ना है, गर्दन को घुमाती रहती हो।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक-सोहन लाल गाडरी
संपादक-लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी-घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक-न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक-कमलादेवी, मुद्रण स्थल-13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर-3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल- ई-डी-71 बप्पा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर-6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक-लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. - 0294–6622222 मो.-09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com